International Journal of Education and Science Research Review

Volume-11, Issue-1 January-February-2024 E-ISSN 2348-6457

(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

ग्रामीण छात्रों की रचनात्मकता और शहरी छात्रों की आविष्कारशीलता का अध्ययन

Amit Kumar Kuldeep,

Research Scholar, Dept of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

Dr Vibha Singh,

Professor, Dept of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सांराश

शिक्षा एक व्यापक और जटिल प्रक्रिया है जो न केवल ज्ञान और कौशल को प्रभावित करती है बल्कि व्यवहार, आचरण, मूल्यों, जरूरतों और विभिन्न प्रकार की मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक विशेषताओं को भी प्रभावित करती है। शिक्षा एक बच्चे या वयस्क द्वारा ज्ञान, अनुभव, कौशल और सकारात्मक दृष्टिकोण का व्यवस्थित अधिग्रहण है। यह एक व्यक्ति को एक पॉलिश, सुसंस्कृत और शिक्षित व्यक्ति में बदल देता है। एक व्यक्ति की शिक्षा उसे बदलते जीवन पैटर्न के अनुकूल होने के लिए तैयार करती है। शिक्षा को बचपन, लड़कपन, किशोरावस्था, युवावस्था, मर्दानगी और बुढ़ापे के दौरान प्राप्त सभी सूचनाओं और अनुभवों के संचय के रूप में परिभाषित किया गया है। शिक्षा चरित्र निर्माण, मन को मजबूत करने और बुद्धि के विस्तार की एक प्रक्रिया है। एक पुरानी भारतीय कहावत के अनुसार, शिक्षा के बिना मनुष्य सींग या पूंछ के बिना एक जानवर है। वह पृथ्वी पर बोझ और समाज पर परजीवी है। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, "एक अहिंसक, गैर–शोषणकारी, सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था स्थापित करना है और शिक्षा उस लक्ष्य तक पहुँचने का एक राजमार्ग है"। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा, "भारत का आदर्श व्यक्ति यूनान का उदार व्यक्ति नहीं है, न ही मध्ययुगीन यूरोप का वीर योद्धा, बल्कि वह स्वतंत्र आत्मा का व्यक्ति है, जिसने कठोर अनुशासन और निःस्वार्थ सद्गुणों के अभ्यास से ब्रह्मांड में अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, जिसने समय और स्थान के पूर्वाग्रहों से खुद को मुक्त कर लिया है। सच्ची भारतीय अवधारणा में शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, यहां तक कि धार्मिक और दार्शनिक सभी बंधनों से मुक्त विचार होनी चाहिए। इसे मन से अंधकार को दूर करके प्रकाश की जगह लेनी चाहिए। शिक्षा ज्ञान के साधक का कैरियर बनाती है। हम अपनी हथेलियों पर भाग्य का निर्माण नहीं कर सकते, लेकिन युवा क्षमताओं का दोहन करके और अदम्य उत्साह, निपुण प्रयासों और दृढ़ निश्चय के साथ भविष्य को आकार दिया जा सकता है।

मुख्य शब्दः शिक्षा, वीर योद्धा, लड़कपन, किशोरावस्था, युवावस्था, चरित्र निर्माण, अदम्य

1. परिचय

शिक्षा चरित्र निर्माण, मन को मजबूत करने और बुद्धि के विस्तार की एक प्रक्रिया है। एक पुरानी भारतीय कहावत के अनुसार, शिक्षा के बिना मनुष्य सींग या पूंछ के बिना एक जानवर है। वह पृथ्वी पर बोझ और समाज पर परजीवी है। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, "एक अहिंसक, गैर–शोषणकारी, सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था स्थापित करना है और शिक्षा उस लक्ष्य तक पहुँचने का एक राजमार्ग है"। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा, "भारत का आदर्श व्यक्ति यूनान का उदार व्यक्ति नहीं है, न ही मध्ययुगीन यूरोप का वीर योद्धा, बल्कि वह स्वतंत्र आत्मा का व्यक्ति है, जिसने कठोर अनुशासन और निःस्वार्थ सद्गुणों के अभ्यास से ब्रह्मांड में अंतर्दृष्टि प्राप्त की है, जिसने समय और स्थान के पूर्वाग्रहों से खुद को मुक्त कर लिया है। सच्ची भारतीय अवधारणा में शिक्षा, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, यहां तक कि धार्मिक और दार्शनिक सभी बंधनों से मुक्त विचार होनी चाहिए। इसे मन से अंधकार को दूर करके प्रकाश की जगह लेनी चाहिए। शिक्षा ज्ञान के साधक का कैरियर बनाती है। हम अपनी हथेलियों पर भाग्य का निर्माण नहीं कर सकते, लेकिन युवा क्षमताओं का दोहन करके और अदम्य उत्साह, निपुण प्रयासों और दृढ़ निश्चय के साथ भविष्य को आकार दिया जा सकता है। कुछ ऐसी आवश्यकताएं हैं जिनके बिना मनुष्य अपना जीवन नहीं जी सकता। इनमें से एक है शिक्षा। यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने कहा है कि मनुष्य स्वभाव से और आवश्यकता से सामाजिक प्राणी है। यदि अच्छाई मनुष्य के जीवन का लक्ष्य है, तो इसकी खोज और उपलब्धि में कुछ शर्तों की पूर्ति शामिल है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वयं के भले के प्रति सचेत रहना चाहिए तथा उसे प्राप्त करने के लिए अपनी कार्य–शक्ति का विकास करना चाहिए। लेकिन साथ ही उसे दूसरों के भले के प्रति भी सचेत रहना चाहिए तथा ऐसी परिस्थितियाँ बनाने में मदद करनी चाहिए जिससे उनकी कार्य–शक्ति का विकास हो सके। इस तथ्य की चेतना व्यक्ति को शिक्षित होने के लिए बाध्य करती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब बच्चा अपनी माँ की गोद में खेलता है, तो वह उसके कानों में फुसफुसाकर उसे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्ञान प्रदान करती है। जब शांत स्वभाव का बच्चा स्कूल की सीढ़ियों पर पैर रखता है और उसके द्वार में प्रवेश करता है, तो उसके ज्ञान का स्तर बढ़ जाता है। जैसे–जैसे समय बीतता है, वह स्कूल की सीमा पार करके कॉलेज और फिर विश्वविद्यालय में प्रवेश करता है। इस प्रकार एक दिन ऐसा आता है जब ज्ञान चाहने वाला नौकरी चाहने वाला बन जाता है। जीवन भर की शिक्षा अब उसके लिए कार्य का क्षेत्र बन जाती है। अपने पूरे जीवन में वह सीखने और सीखने का प्रयास करता है जो शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया बनाता है। सामान्य रूप से कहें तो, "शिक्षा तीन पहलुओं में जानी जाती है; ज्ञान, विषय और प्रक्रिया। जब कोई व्यक्ति एक निश्चित स्तर तक की डिग्री प्राप्त कर लेता है, तो हम उसे शैक्षिक योग्यता कहते हैं। दूसरे अर्थ में शिक्षा का उपयोग अनुशासन या विषय के रूप में किया जाता है। तीसरे अर्थ में, शिक्षा का उपयोग एक प्रक्रिया के रूप में किया जाता है। शिक्षा एक व्यापक और जटिल प्रक्रिया है जो न केवल ज्ञान और कौशल में बल्कि दृष्टिकोण, व्यवहार, मूल्यों,

आवश्यकताओं और कई लक्षणों में भी परिवर्तन लाती है जो प्रकृति में मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक हैं। शिक्षा एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक बच्चा या एक वयस्क ज्ञान, अनुभव, कौशल और स्वस्थ दृष्टिकोण प्राप्त करता है। यह एक व्यक्ति को परिष्कृत, सुसंस्कृत और शिक्षित बनाता है। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के बदलते पैटर्न के साथ खुद को समायोजित करने के लिए बनाती है। शिक्षा शैशवावस्था, बचपन, लड़कपन, किशोरावस्था, युवावस्था, पुरुषत्व या वृद्धावस्था के दौरान अर्जित सभी ज्ञान और अनुभव का योग है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

21वीं सदी– कंप्यूटर युग मनुष्य को मशीन की तरह व्यवहार करने के लिए बाध्य कर रहा है, जिसमें अत्यधिक एकाग्रता और त्वरित प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। आज मनुष्य का जीवन और जीवन–यापन आदिम दिनों से बिल्कुल अलग है। मानव विकास के शुरुआती दिनों में मनुष्य प्रकृति या पर्यावरण का गुलाम था। लेकिन अब वह प्राकृतिक शक्तियों और प्राकृतिक पर्यावरण पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हो गया है। उसने समय और दूरी, समुद्र और आकाश पर विजय प्राप्त कर ली है। लेकिन समय के साथ–साथ व्यक्ति और पर्यावरण दोनों बदल रहे हैं। पहले वह अपनी आवश्यकताओं को तात्कालिक पर्यावरण से पूरा करता था।

लेकिन जैसे–जैसे मनुष्य अपने पर्यावरण में मौजूद चीजों के प्रति जागरूक हुआ, उसकी आवश्यकताएं बढ़ती गईं और बढ़ती जरूरतों के साथ समाज की जटिल व्यवस्था को जन्म दिया। ज्ञान के विस्फोट और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जबरदस्त विकास के साथ समाज की सभी सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक स्थितियां भी बदल गई हैं। इसलिए, वर्तमान समाज एक निरंतर परिवर्तनशील समाज है और समय बीतने के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताएं भी दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। आज व्यक्ति विरोधाभासों का सामना कर रहा है और इसलिए अपने अस्तित्व को बनाए रखने में कठिनाई का सामना कर रहा है।

क्रांतिकारी परिवर्तनों की तीव्र गति के कारण, समाज को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही समायोजन के विभिन्न स्तरों का भी सामना करना पड़ रहा है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इन परिवर्तनों ने समाज में व्यक्तियों के व्यक्तित्व संतुलन को बिगाड़ दिया है, जो मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में तकनीकी विकास की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। किसी व्यक्ति के व्यवहार को उस पर लाए जाने वाले विभिन्न प्रकार की मांगों या दबावों के रूप में वर्णित किया जा सकता है। समुदाय की सामान्य आबादी के सदस्यों के बीच बहुत कम व्यक्ति ऐसे होते हैं जो विशेषताओं के चरम पर होते हैं। जीवन परिवर्तनों और चुनौतियों की एक सतत श्रृंखला है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्तित्व या विकास के लिए तनावपूर्ण स्थितियों का सामना कर रहा है। जीवन के प्रत्येक क्षण में कोई भी व्यक्ति अपने वर्तमान स्वरूप से थोड़ा अलग कुछ बनने की प्रक्रिया में होता है।

पूरा पैटर्न बदल रहा है और एक समय में परिवर्तन के तथ्य और पैटर्न के तथ्य दोनों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है। परिवर्तन की किसी भी अवधि के साथ कई संभावित कठिनाइयाँ होने की संभावना होती है। वर्तमान बदलते युग में, जो सामाजिक मानदंडों और मूल्यों में कमी के कारण सामाजिक टकरावों से चिह्नित है, व्यक्तित्व में अतिरिक्त विशेषताओं के बिना समाज में सफल जीवन जीना मुश्किल है। एक बच्चे को सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करना समाज, राज्य और राष्ट्र की जिम्मेदारी है और इसलिए घर, स्कूल आदि विभिन्न एजेंसियां काम कर रही हैं।

3. अध्ययन का उद्देश्य

1. ग्रामीण छात्रों की रचनात्मकता और शहरी छात्रों की आविष्कारशीलता की जांच करना।

2. यह जांच करना कि ग्रामीण छात्र कैसे समायोजित होते हैं और शहरी छात्र कैसे अनुकूलन करते हैं।

4. शोध विधि

शोध विधियाँ शोध प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वे शोध समस्या को हल करने में अपनाई जाने वाली हमले की योजना के विभिन्न चरणों का वर्णन करती हैं।

शोध की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अध्ययन के लिए उपयुक्त रूप से नियोजित है। वर्णनात्मक शोध मात्रात्मक या गुणात्मक हो सकता है। इसमें मात्रात्मक जानकारी का संग्रह शामिल हो सकता है जिसे संख्यात्मक रूप में एक निरंतरता के साथ सारणीबद्ध किया जा सकता है, जैसे कि किसी परीक्षण पर स्कोर या किसी व्यक्ति द्वारा मल्टीमीडिया प्रोग्राम की किसी निश्चित सुविधा का उपयोग करने की संख्या, या यह समूह की स्थिति में प्रौद्योगिकी का उपयोग करते समय लिंग या बातचीत के पैटर्न जैसी जानकारी की श्रेणियों का वर्णन कर सकता है।

वर्णनात्मक शोध में डेटा एकत्र करना शामिल है जो घटनाओं का वर्णन करता है और फिर डेटा संग्रह को व्यवस्थित, सारणीबद्ध, चित्रित और वर्णित करता है। यह अक्सर डेटा वितरण को समझने में पाठक की सहायता के लिए ग्राफ़ और चार्ट जैसे दृश्य सहायता का उपयोग करता है। चूँकि मानव मस्तिष्क कच्चे डेटा के बड़े द्रव्यमान का पूरा महत्व नहीं निकाल सकता है, इसलिए डेटा को प्रबंधनीय रूप में कम करने में वर्णनात्मक सांख्यिकी बहुत महत्वपूर्ण है। जब मामलों की छोटी संख्या के गहन, कथात्मक विवरण शामिल होते हैं, तो शोध विश्लेषण के दौरान उभरने वाले पैटर्न में डेटा को व्यवस्थित करने के लिए विवरण को एक उपकरण के रूप में उपयोग करता है। वे पैटर्न गुणात्मक अध्ययन और उसके निहितार्थों को समझने में मन की सहायता करते हैं।

डेटा का संग्रह सभी मानकीकृत सूची का उपयोग शोध विद्वान द्वारा छात्रों के चयनित 400 नमूनों पर किया जाता है। एकत्रित डेटा के आधार पर शोधकर्ता द्वारा एक मास्टर शीट तैयार की गई, जिसमें अध्ययन के तहत शिक्षकों की प्रतिक्रिया

के बारे में प्रस्तुत किया गया। इसे व्यवस्थित रूप से प्रबंधित किया गया था, जिसमें ज्ॅ और ।ै परीक्षण द्वारा प्राप्त अंकों का विवरण दिखाया गया था। कच्चे अंक अनुलग्नक तालिकाओं में मौजूद हैं।

5. डेटा का विश्लेषण और व्याख्या

तलिका::5.1 ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

छात्र	माध्य (एम)	SD (σ)	स्वतंत्रता की डिग्री (डीएफ)	महत्व		टी मान
ग्रामीण छात्र (लड़के + लड़कियां)	87.44	14.28	398	0.01	2.59	**2.40**
शहरी छात्र (लड़के + लड़कियां)	84.08	13.71		0.05	1.97	

$$t = \frac{M_1 - M_2}{S_{Ed}}$$

$$= \frac{87.44 - 84.08}{1.4}$$

$$= 2.40$$

$$S_{Ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \sqrt{\frac{14.28^2}{200} + \frac{13.71^2}{200}}$$

$$= 1.4$$

df= (200−1)+(200−1) = 398

df =398 के लिए 0.01 महत्व स्तर पर 'ज' का मानक मान 2.59 है और 0.05 महत्व स्तर पर यह 1.97 है। 'ज' का परिकलित मान 2.40 है जो 0.05 स्तर से अधिक है लेकिन 0.01 स्तर से कम है। इसलिए परिकल्पना 0.05 स्तर पर सार्थक है और 0.01 स्तर पर महत्वहीन है। इस प्रकार 0.01 स्तर पर ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

तलिका::5.2 ग्रामीण लड़कों और ग्रामीण लड़कियों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

छात्र	माध्य (एम)	SD (σ)	स्वतंत्रता की डिग्री (डीएफ)	महत्व		टी मान
ग्रामीण छात्र लड़के	88.21	13.71	198	0.01	2.61	**0.76**
ग्रामीण छात्र लड़कियां	86.67	14.86		0.05	1.98	

$$t = \frac{M_1 - M_2}{S_{Ed}} \qquad S_{Ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \frac{88.21 - 86.67}{2.02} \qquad = \sqrt{\frac{13.71^2}{100} + \frac{14.86^2}{100}}$$

$$= 0.76 \qquad = 2.02$$

df= (100−1)+(100−1) = 198

df =198 के लिए 0.01 महत्व स्तर पर 'ज' का मानक मान

2.61 है और 0.05 महत्व स्तर पर यह 1.98 है। 'ज' का परिकलित मान 0.76 है जो इन दो मानक मानों से कम है, और इसलिए महत्वहीन है। इस प्रकार ग्रामीण लड़कों और ग्रामीण लड़कियों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इस प्रकार परिकल्पना सत्य साबित होती है।

तलिका::5.3 शहरी लड़कों और शहरी लड़कियों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

छात्र	माध्य (एम)	SD (σ)	स्वतंत्रता की डिग्री (डीएफ)	महत्व	टी मान

शहरी लड़के	84.80	13.65	198	0.01	2.59	**0.74**
शहरी लड़कियां	83.37	13.81		0.05	1.97	

$$t = \frac{M_1 - M_2}{S_{Ed}} \qquad S_{Ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \frac{84.80 - 83.37}{1.93} \qquad = \sqrt{\frac{13.65^2}{100} + \frac{13.81^2}{100}}$$

$$= 0.74 \qquad = 1.93$$

df= (100−1)+(100−1) = 198

df =198 के लिए 0.01 महत्व स्तर पर 'ज' का मानक मान 2.61 है और 0.05 महत्व स्तर पर यह 1.98 है। 'ज' का परिकलित मान 0.74 है जो इन दो मानक मानों से कम है, और इसलिए महत्वहीन है। इस प्रकार शहरी लड़कों और शहरी लड़कियों की रचनात्मकता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। परिकल्पना सत्य है।

तलिका::5.4ग्रामीण और शहरी छात्रों के समायोजन के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

छात्र	माध्य (एम)	SD (σ)	स्वतंत्रता की डिग्री (डीएफ)	महत्व		टी मान
ग्रामीण छात्र (लड़के + लड़कियां)	21.23	7.45	398	0.01	2.59	**7.90**
शहरी छात्र (लड़के + लड़कियां)	27.98	9.51		0.05	1.97	

$$t = \frac{M_1 - M_2}{S_{Ed}}$$

$$= \frac{21.23 - 27.98}{0.85}$$

$$= 7.90$$

$$S_{Ed} = \sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}$$

$$= \sqrt{\frac{7.45^2}{200} + \frac{9.51^2}{200}}$$

$$= 0.85$$

df= (200−1)+(200−1) = 398

df =398 के लिए 0.01 महत्व स्तर पर 'ज' का मानक मान 2.59 है और 0.05 महत्व स्तर पर यह 1.97 है। 'ज' का परिकलित मान 7.90 है जो इन दोनों मानों से अधिक है। इसलिए परिकल्पना सार्थक है। इस प्रकार ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों के समायोजन के बीच सार्थक संबंध है। परिकल्पना विफल है।

6. निष्कर्ष

किसी भी शोध की उत्कृष्ट विशेषता यह है कि यह संबंधित क्षेत्र के विकास की दिशा में कुछ नया योगदान देता है। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों ने कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे उठाए हैं जो विभिन्न तरीकों से फायदेमंद हैं। वर्तमान अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में ज्ञान के संचरण के कार्यान्वयन की रणनीतियों में सुधार के लिए निम्नलिखित निहितार्थों पर असर डालता है। माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के समग्र विकास में सृजनात्मकता और समायोजन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों के आलोक में इसका प्रभाव माता–पिता, शिक्षकों, प्रशासकों के साथ–साथ सामान्य रूप से विद्यार्थियों पर भी पड़ता है।

अक्सर हम बच्चों के ऐसे समूह को देखते हैं जो प्रेरणाहीन, रुचिहीन और कम प्रदर्शन करने वाले होते हैं। यह सब सीखने की प्रक्रिया में सृजनात्मकता और समायोजन की कमी का परिणाम है। इसलिए, रचनात्मकता के इनक्यूबेटर और स्कूली विद्यार्थियों के समग्र समायोजन पर इसकी प्रभावशीलता की डिग्री को समझना और पहचानना आवश्यक है। इस प्रकार इसने अन्वेषक को इस क्षेत्र का पता लगाने के लिए प्रेरित किया है।

अध्ययन का निहितार्थ सीखने वाले समूहों की जरूरतों को पूरा करना है। अध्ययन के दौरान, सर्वेक्षण पर आधारित कुछ विशिष्ट अवलोकन के लिए कुछ रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से सीखने की स्थिति में सुधार करने के लिए

रणनीतिक योजना की आवश्यकता होती है। वर्तमान अध्ययन में शिक्षा के क्षेत्र में कार्यान्वयन की एक विस्तृत श्रृंखला है। कुछ निहितार्थ नीचे दिए गए हैं:

छात्रों के ऊर्जा स्तर और कक्षा के माहौल को बेहतर बनाने के लिए, शिक्षक को अनुकूल माहौल बनाना चाहिए ताकि समायोजन प्रक्रिया और परिणामस्वरूप उनकी रचनात्मकता का स्तर बढ़े।

ध्यान और योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए ताकि छात्रों के एकाग्रता स्तर को बढ़ाया जा सके, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों की रचनात्मकता और समायोजन में वृद्धि होगी।

विभिन्न सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि उनकी छिपी प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए मंच प्रदान किया जा सके।

विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर तक पहुँचने के लिए फील्ड ट्रिप और पर्यटन की व्यवस्था की जा सकती है। अंततः छात्रों की मानसिकता स्थिति को मानकीकृत करेगी।

समायोजन की समस्या का सामना करने वाले छात्र अपनी क्षमता और संभावनाओं का उचित तरीके से उपयोग करने में असमर्थ हैं। विशेष रूप से महिला छात्रों को पुरुषों की तुलना में अधिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए, स्कूलों को लड़कियों के लिए विभिन्न शैक्षणिक प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए, ताकि वे अपनी प्रतिभा को उचित तरीके से खोज सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अबताही, एम. और नादरी खादीजेह, (2012)। हाई स्कूल के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ रचनात्मकता और सामाजिक अनुकूलन के बीच संबंध। शैक्षिक प्रशासन अनुसंधान त्रैमासिक, 3 (2 –10), 15–
- 28। आचार्य, के. (2009)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिंग, स्कूल के प्रकार, रचनात्मकता और मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन। मनोविज्ञान पत्रिका, 12 (5), 127–134।
- एडेनियि, एम. (2008)। स्कूल जाने वाले छात्रों की अंग्रेजी और गणित में रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच।
- सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 17 (3), 85–191। अग्रवाल, एस. रोनाल्ड आर. और गैरी, डी. (2010)। किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर टाइप–ए और टाइप–बी व्यवहार पैटर्न का प्रभाव। व्यवहार चिकित्सा पत्रिका, 9,537–548।

- अहमद रस्तेगर, फरशीद घासमी, रेजा घोरबन, जे. रोगायह, आर. मार्वदाश्ती, (2011)। हाई स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता और उपलब्धि प्रेरणा के बीच संबंध। जर्नल ऑफ सोशल एंड बिहेवियरल साइंसेज, 30, 1291–1296।
- अहमद, एस. (1987)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर मौखिक रचनात्मकता का प्रभाव। ओरिएंट में मनोविज्ञान का एक अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 21 (3), 146–158।
- ऐ, एक्स. (1999)। रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धिः लिंग भेद की जांच। जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च, 12,329–337।
- ऐ, वाई.एम. (1999)। हाई स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- ऐमा, डी. (1999)। हाई स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। क्रिएटिविटी रिसर्च जर्नल, 2 (2), 41–53।
- ऐमा, जी(1999)। किशोरों की स्कूल की जलवायु रचनात्मकता, व्यक्तित्व और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च, 49, 2, 77–78।
- आयशा, एम.जे. और किरण, सी. (2002)। स्कूल जाने वाले बच्चों की रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध। इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, 45 (2), 82–93।
- अजय, आर. (2004)। हाई स्कूल के छात्रों की रचनात्मकता पर जनसांख्यिकीय चर और मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव। अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा विभाग। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़।
- अजीथा, डी. (1992)। केरल के उच्चतर माध्यमिक छात्रों की रचनात्मकता, बुद्धिमत्ता, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण और उपलब्धि के बीच संबंध का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम.एड. शोध प्रबंध, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम।
- अकबर हुसैन, एम. (2008)। हाई स्कूल के छात्रों के बीच स्कूल के प्रकार और रचनात्मकता पर एक अध्ययन। अप्रकाशित पीएच.डी. थीसिस, शिक्षा विभाग। उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर।
- अकिनबॉय, जे.ओ. (2004)। शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार। इनः ओ. अयोडेले बामिसाई, आई.ए. नवाजुओके, ए. ओकेदिरन, एजुकेशन थस मिलेनियमः थ्योरी और प्रैक्टिस में नवाचार, इबादानः मैक मिलन नाइजीरिया पब्लिशर्स लिमिटेड।

- अकिनबॉय, जे.ओ. (2004)। शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार। इनः ओ. अयोडेले बामिसाई, आई.ए. नवाजुओके, ए. ओकेदिरन, एजुकेशन थस मिलेनियमः थ्योरी और प्रैक्टिस में नवाचार, इबादानः मैक मिलन नाइजीरिया पब्लिशर्स लिमिटेड।